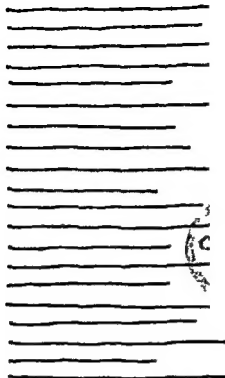


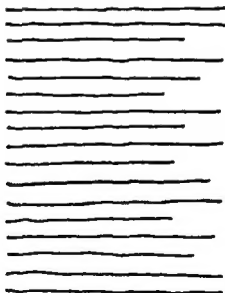
काजल प्रकाशन, वीकानेर



10878

10878  
16.5.91

दुःख रंगते हैं मन को



नवल बीकानेरी

— नवल बीकानेरी

संस्करण 1991

मूल्य सत्तर रुपये मात्र

सावरण समित भारत

प्रकाशक काजल प्रकाशन

नवीन कुंठेर रानी बाजार बीकानेर-334 001

मुद्रक साधना प्रिन्स गुप्त निवास

बनार बाजार बीकानेर

---

Dukh Rangte Hain Man ko (Poetry)

by Naval Bikaneri

Rs 70 00



प्रातः स्मरणीय पूज्य बाबूजी की  
पुण्य स्मृति में

पुरातन सस्कृति की गोद में  
सस्कार  
आज भी कर रहा है  
मेरे बाग के माली को  
शत शत नमस्कार  
जबकि मेरा बापू चला गया है  
मायावी जाल से दूर, बहुत दूर  
मैं बाबा का हूँ  
बाबा मेरे हैं  
बाबूजी  
मेरे 'दुःख रगते हैं मन को' का  
पहला पृष्ठ है,  
नवीन अर्थ है,  
नव दर्शन है।



## अनुक्रम

डु ख

चि तन और आसू	11
रामायण और महाभारत	12
एक ईमानदार जिन्दगी	13
पानी और पानी	14
पानी के फूल	15
एकता	16
एक है सब कुछ	17
एक नेक इरादा	18
प्यार है एक जैसा	19
सोच की गहराई	20
जिस्म के तवे पर	21
कलैण्डर	22
चीप	23
अजीबो गरीब	24
समझ का आईना	25
कागज की मचली	26
आइठानो के निशान	27
दद की गठरी	28
काले खून की सत्ता	29
परिक्लमा	30
पतझड़	31
सच्चाई	32
जीवन है एक सफर	33
रम के फूलों की खुसबू	34
नयी उम्मीद के नये सपने	35
दद का सगीत	36
अवल का पौधा	37
रचती है रेत	38
यथाथ का अमृत	39
कच्चे घागे	40
मिट्टी और मिट्टी	41

सूबसूरत खयाल	42
आसू और बनवासीराम	43

## रग

पीडा	47
सोच	48
खामोशी	49
दीपमाला	50
मेरी घरती की गंगा	51
सस्कार	52
चिट्ठी	53
मैं चला अपनी नींद में	54
वेदना का वेग	55
हसीन परा के साथ	56
कागज की नाव	57
उड़ते सूखे पत्तों के हस्ताक्षर	59
जीवन मृत्यु का गठ बघन	60
दद की आँच	61
वफा स डके पत्थर	62
दीपक	63

## रगा हुआ मन

मोर मुकुट	67
नींद करेगी स्वागतम्	68
आसू और आँचल	70
मन स्थितियाँ	71
पाचवाँ जग	72
लड्डू और प्यार	73
सघप	74
स्वप्न की तीर्थ यात्रा	75
दिन की गहराइयाँ का साँवरा	76
परहित की भावना	77
अनकार	79
दुःख रगते हैं मन को	80

## दुःख

अनुभूति के अनुपात का अनुमान है कविता,  
हृदय-स्पर्शी भावार्थ का वरदान है कविता  
कविता के रस रसायन को लहलुहान न कर,  
यह तो जीवन सघष की पहचान है कविता ।

नयल धीकागेरी





## चित्तन और आसू

आख का आसू  
कोरे कागज की  
विदिया बनकर  
ऐसे चिपका है  
मेरे चित्तन से  
जैसे कोई बदरिया  
अपने बच्चे से ।

रामायण और महाभारत

मानव का भीतरी भाग  
रामायण  
और बाहरी भाग  
महाभारत ।

एक ईमानदार जिन्दगी

फेरियाँ

लगाती-लगाती

जा रही है

एक ईमानदार जिन्दगी

एक फरिश्ते से यह कहने कि

दुनिया धनाने वाले से पूछ

तेरी भूल क्या है ?

## पानी और पानी

आँख से  
उतरा हुआ  
बोई मोती  
जा रहा है  
गगोत्री  
एक ठोस इरादा लेकर  
यह पूछने कि—  
तेरे पानी में  
और मेरे पानी में  
फर क्या है ?

पानी के फूल

ये आसू नहीं  
पानी के फूल हैं  
ऐ सुदा !  
मुझे भी लगाने दे  
तेरे घर में फुलवारी ।

## एकता

एकता को बाधलो  
मन के सूत्र से  
और घरातल पर  
खड़े होने दो  
इ-सानियत के पेढा का  
ताकि फिर कोई महात्मा बुद्ध  
आकर बैठ सके ।

एक है सब कुछ

एक गरीब का घर  
एक अमीर की कोठी  
एक ही खुदा और  
एक ही रोटी ।



एक नेक इरादा

आज चाँद  
बादला में छुपा है  
हम रात डालग ।

प्यार है एक जैसा

माँ तेरा प्यार  
सबके लिए एक्सा है  
पर तेरे बच्चों में  
एकता नहीं है।

सोच की गहराई

चिटिया की चोच में दाना  
और दाने में बच्चा  
जी छोटा न कर  
ऐसी होती है  
माँ की ममता ।

## जिस्म के तवे पर

वह आटे को गूथकर  
जिस्म के तवे पर  
रोटी सेंक रही है  
और परमायु मुक्त साधन जुटाकर  
परिमाजित कर रही है  
अपनी कला,  
अपने साधन  
व अपना दर्पण ।

कैलेण्डर

रोटिया का बनाकर  
आज कैलेण्डर  
कोई भूख समेट रहा है  
अपने अंदर।

चीख

दर्द की चीख से  
उपजा हुआ समाज  
अब जरम खोलकर  
दे रहा है आवाज ।

## अजीबो गरीब

स्वप्न था  
अजीबो गरीब  
एक दिन बन गया  
मैं कबूतर  
तो कबूतर-बाज ने  
मुझे पकड़ लिया  
पंख बाटे,  
दाना खिलाया  
व पाला बड़े प्यार से  
स्वप्न टूटा  
तो फिर पाया अपने आपको  
मेंहगे भावा में,  
जड़म और घावों में ।

समझ का आईना

मेरे सासो से कटी  
एक सीधी लकीर  
कोरे यागज पर  
दर्शन लगी है  
पीडा ।



### कागज की मचली

आस्था, विश्वास,  
चेतना और कल्पना  
के पायो पे खड़ी  
कागज की 'मचली'  
एक सच्चा सबूत  
पेश कर रही है  
जज साहब !  
उमरो घर से  
दद मिला है  
बह दद बटोर रही है ।

## आइठानो के निशान

हाथो मे उमरे हुए  
कुछ आइठानो के निशान  
चुभे हुए काटो की,  
पकी हुई फुलियो मे  
नजर आते हैं  
तो भी मेहनताना बहुत कम है  
'मजदूर वग का'  
क्योकि गोलाकार का आकार  
छोटा और  
बहुत छोटा ह ।

## दद की गठरी

इस गठरी को  
खोलो मत  
अचम्भा बरोगे  
माली शीशिया हैं,  
फटे हुए बागज ह  
और रंग बिरंग  
बपडों की लीरियाँ ह  
मोल ही ली है  
तो मममो  
दद का मत नब ।

काले खून की सजा

कटोरो से ढलकने वाले  
दो आसू भी  
जहर पी सके  
इसलिए मैंने  
कलम से स्याही छिटका दी  
वाले खून की सजा देकर ।

### परिक्रमा

औसो का पानी  
पानीदार महल बनाकर  
बदना से जमी  
एक लम्बी यात्रा की  
'परिक्रमा'  
पूरी करने लगा ह  
इसलिए मैं बाई 'भुविनाश'  
बाध कराये  
मयेदन-शील हृदय का ।

पतझड़

पतझड़ को देखकर  
मेरा चिन्तन रोया झर-झर  
कड़की क्यों नहीं बिजली ?  
बरसा क्यों नहीं बादल ?

### सच्चाई

घादल की एव बूद  
ओर आल का एव आसू  
इस बात को जानता है कि  
शून्य सच की परिभाषा है ।

जीवन है एक सफर

धूप ने सिखाया है  
छायादार वृक्ष के नीचे बैठना  
इसलिए कि  
जीवन एक लम्बा सफर है।



कर्म के फूलों की खुशबू

भरनो से  
नदियो तब जाकर मैं  
सौट आया  
फिर चीड़े मैदानो में  
मेहनत-बश ह-सानो में  
ताकि ले सकू  
गम के फूलों की खुशबू ।

नयी उम्मीद के नये सपने

ओ प्रात काल की 'रश्मि'  
मुझे उस राह पर बैठा दे,  
जहा भारतीय दशान है  
और भारतीय परम्परा है ।

### बर्द का सगीत

रेत के घर में  
बीज बन गया हूँ,  
फिर नये जन्म का  
एक गीत बन गया हूँ ।  
ज़िन्दगी में है  
त्रैलोक्य गम मगर,  
आज मैं दद का  
सगीत बन गया हूँ ।

### अवल का पौधा

जब-जब कमल सिले कीचड़ में  
वनवर सौ ज़मो का दानी,  
फिर तू वन आज 'अवल का पौधा'  
और पौधे का पानी ।

रचती है रेत

रेत उड़ उड़ कर बनाती है  
हर रोज एक नया श्रूय  
फिर तू रेत, बीज व फूल बनकर  
आज चुका जीवन का मत्स्य ।

पथाथ का अमृत

मुझसे ज्यादा तो  
मेरे कपड़े अच्छे हैं  
जो तन से निकले  
पसीने का अमृत पीते हैं।

## फच्चे धागे

अच्छा है  
बच्चे धागा की तरह  
छिन्न-भिन्न होकर  
गिरकर जाये  
जो मरने में  
बर्बाद चलाई थी  
दो गी फुट नम्वी  
एक दरी ।

## मिट्टी और मिट्टी

मिट्टी से बनी मटकी  
पानी भरती है ठंडा  
मिट्टी से बना आदमी  
मारता है डंडा ।



खूबसूरत खयाल

इस खयाल है यागे  
इतना बारीक  
एक साग टगी है  
या पहली तारीफ ।

आसू और वनवासीराम

बहता-बहता  
जगल-जगल  
उस पावन गंगा जल में मिल जाये  
मेरा आसू  
मेरे भैया  
वनवासीराम वन जाये ।



## रंग

पक्की चट्टानों से  
इस कच्ची दीवार को  
बहुत कुछ सीखना है  
ज़िन्दगी है इस रेल की पटरी  
रुक रुक कर,  
देख देख कर  
चलना है ।



## पीडा

हृदय के पिंजरे में बन्द  
पीडा,  
मेरे चिन्तन का दाना  
चुगती-चुगती  
अब कागज के घर में  
रहने लगी है  
ताकि 'कविता'  
परोपकारी-पक्षी बनकर  
मानव धल्याण के  
सपनों में जुटी रहे।

## सोच

एक काँए ने  
एक चिड़िया के  
बच्चे को  
अपनी चाच स  
बर दिया धायल  
तो मिट्टी ने  
पैर बिछा दिय ममता के  
कुछ तो सोचा,  
जगाय हुए सोच  
और बुभाये हुए  
निगाह पर ।

## खामोशी

सागर के  
किनारे पर  
खड़ी एक खामोशी  
सागर में बहती  
कश्ती को देखकर  
चुप है  
एक टीस लिये,  
जरा अफसोस लिये ।



### दीपमाला

ग्रहाण्ड से  
बाली रात ने  
घुँछ तारों की  
दीपमाला उधार माँग ली  
उन बैरागी तनहाइयों के लिए,  
उन सायासी पवनों के लिए  
जिनके स्वप्न का आधार  
स्वयम् दशन है ।

## मेरी घरती की गंगा

आकाश गंगा  
आँसो की गंगा के  
समानान्तर होकर  
जब कभी घरती की  
गंगा के गीत गाये  
तो 'हृदय-स्पर्शी कविता'  
फिर एक बुलावा भेजना  
इस दुनियाँ, लोग, समाज  
और ग्रहाण्ड को  
ताकि वे सब आकर  
मेरी घरती की गंगा का  
स्वागत कर सकें ।

## सस्कार

मेरा आसू  
मेरा प्रसाद है  
मेरे सस्कार का  
इसलिए मैं  
दिल के सागर में  
डुबकियाँ लगा रहा हूँ  
शब्द चित्रों की,  
मछलियाँ पकड़ने  
मछेरा हूँ  
या यवि  
विद्यास नहीं होता  
आप जो भी समझा  
मैं जीवन में—  
निगम नहीं होता ।

## चिट्ठी

सबव्यापी बिम्ब की  
एक चिट्ठी  
प्रकृति के नाम  
और मैं डाकिया  
शहर से गाँव,  
गाँव से शहर  
देश से विदेश,  
विदेश से देश  
भटकता रहा  
तो सहसा  
एक हवा का झोका आया  
ले गया चिट्ठी उड़ाकर  
मैं अवाग् देखता रहा ।

मैं चला अपनी नींद मे

अलकार झूमता  
छन्द बोलता  
आ रहा है  
स्वप्न फिर मेरी नींद मे  
ओ जागती नींद की  
वेचैन अवस्था सुन,  
जबकि एक दु स है  
हजार सुख से अच्छा  
फिर तू सीख  
पीडा को सहना  
और इतना सुन्दर जीना ।  
अलकार झूमता  
छन्द बोलता  
आ रहा है  
स्वप्न फिर मेरी नींद मे,  
मैं चला अपनी नींद मे ।

## वेदना का वेग

वेदना का वेग  
आसू बनकर  
वह गया  
न जाने कहा जाकर  
ठहरेगी यह गंगा  
जो दिल से निवली,  
माँखो से उतरी  
धरा पर  
या नील सरोवर में  
न जाने कहा जाकर  
ठहरेगी यह गंगा ।

## हसीन परो के साथ

छोटे-छोटे  
प्यारे-प्यारे  
हसीन परो से  
उठती देखी है  
मैंने अपनी दो आँखें ।  
बच्चो करलो  
मेरे क्षण-क्षण की  
पल-पल की  
इकट्टी पाँखें ।  
तुम्हारे गुड्डे को  
गर्मी लगेगी  
तो हवा देगी,  
तुम्हारी गुडिया को  
सर्दी लगेगी  
तो दवा देगी  
आपसी प्यार करा देगी ।  
तब रचाना बच्चो,  
गुड्डे-गुड्डी का ब्याह  
और फिर रचना के  
रचियता को बुलाना  
म आऊगा,  
छोटे-छोटे  
प्यारे-प्यारे  
हसीन परो के साथ ।

## कागज की नाव

उड़ती  
उड़ाती  
उड़ चली है  
वो कागज की नाव  
जो मैंने बनाई थी  
अपने मुन्ने राजा के लिए  
मुन्ना राजा  
रोने लगा  
हाथों से गालों को बजाने लगा  
और बहने लगा  
हवा ले गयी  
पानी में चलने वाली नाव वो ।  
तो मेरी समझ में आया  
एक तरफ  
रेगिस्तान के ऊँचे-नीचे टीले  
जो तेज हवाओं से  
बनते-बिगड़ते हैं ।



दूसरी तरफ  
 वो बड़े-बड़े पहाड़  
 जो ज्वालामुखी के आने से  
 फूट-फूट कर रो रहे हैं ।  
 बनते, बिगड़ते  
 व फूट-फूट कर रोने की प्रिया में  
 क्रिया-शील होकर  
 बहने लगा,  
 हा बेटे हा  
 हवा ले गयी  
 पानी में चलने वाली नाव को ।

## उड़ते सूखे पत्तों के हस्ताक्षर

उड़ते सूखे पत्तों के हस्ताक्षर  
अपनी घरती की माटी पर  
चार चाद अंकित करके  
विधि के विधान के साथ  
चार घोड़ों के एक रथ पर  
सीधे बैकुण्ठ जा रहे ह  
जाते वक्त  
मेरे स्वप्न का प्रवाह भी  
उनके साथ था  
इसलिए मैं अब तक भूला नहीं  
जन्म के साथ मृत्यु बोध को  
और वीद्विक् पाठ को  
जो कभी मैंने पढ़ा था,  
उड़ते सूखे पत्तों के साथ रहनर ।

दूसरी तरफ  
वो बड़े-बड़े पहाड़  
जो ज्वालामुखी के आने से  
फूट-फूट कर रो रहे हैं ।  
बनते, बिगड़ते  
व फूट-फूट कर रोने की क्रिया में  
क्रिया-शील होकर  
कहने लगा,  
हा बेटे हा  
हवा ले गयी  
पानी में चलने वाली नाव को ।

उड़ते सूखे पत्तों के हस्ताक्षर

उड़ते सूखे पत्तों के हस्ताक्षर  
अपनी धरती की माटी पर  
चार चाद अंकित करके  
विधि के विधान के साथ  
चार घोड़ों के एक रथ पर  
सीधे वंकुण्ठ जा रहे ह  
जाते वक्त  
मेरे स्वप्न का प्रवाह भी  
उनके साथ था  
इसलिए मैं अब तम भूला नहीं  
जन्म के साथ मृत्यु बोध को  
और बौद्धिक पाठ को  
जो कभी मैंने पढ़ा था,  
उड़ते सूखे पत्तों के साथ रहकर ।

### जीवन मृत्यु का गठ-बधन

दिल के तारों की रोशनी में  
में धुंधली परछाइयों को  
साफ देखकर  
आहिस्ता-आहिस्ता  
कुछ लिए रहा हूँ  
एक यकीन के साथ  
यह,  
सब कुछ है  
और कुछ भी नहीं ।  
तो सब व क्षण का  
एक साथ होने वाला ज़म  
मुझे ले गया तनहाइयों में  
मैं वहाँ तक पहुँचा  
फिर आ गया  
जैसे रोजमर्रा की जिंदगी में होता है  
जीवन मृत्यु का गठ-बधन ।

## दद की आँच

दद की आँच से  
सुलगती जिन्दगी  
सोने जैसी रेत का  
चन्दन लगाकर  
भ्रान्तिमान अलवार की छवि बनकर  
फिर 'वनवासीराम' के पीछे निबली है  
'भरत-मिलाप' करने  
सदिया गुजर गयी,  
पीडिया गुजर गयी  
पर, पीडा  
हीरा बनकर  
मेरे भरोसे की 'भीलनी' बनी है ।  
राम-लक्ष्मण जानते हैं  
भरत का प्यार,  
प्यार की ऊँचाई  
और दिल से—  
चाहने वालों की सच्चाई ।

## बर्फ से ढके पत्थर

हिमालय पर  
बर्फ से ढके पत्थर  
गा रहे हैं  
अनंत दु खों की  
'एक सन्त क्या'  
यह बात  
बर्फ के पानी ने  
एक दिन  
गंगा घाट पर  
स्नान करने से पहले  
मुझसे कही,  
तो अलवार से जड़ी  
'सुनित-परब रचना'  
धरती की हरी हरी घास पर  
दो घुटनों के बल  
बैठलेलिया करने लगी  
सागर की लहरों की तरह,  
नटखट भोले बचपन की तरह  
तब मैं भूल गया  
अपने चालीस साल,  
अपने दु खों का विस्तृत समाज  
और आशावादी बनकर जीने लगा  
अपने जन्म के तपोवन से तपे,  
बर्फ से ढके  
उन पत्थरों की तरह ।

## दीपक

दीपक लगा रहा है  
फेरी दीपक की  
एक सच्चाई का  
कई जन्मों से  
अनुकरण करने  
कर्मयोगी बनकर,  
विघ्न न डाल  
ओ शैतानी हस्ताक्षर ।  
डाली के पत्तों का रंग  
सूखी पत्तियों में है ।  
प्रकृति की मीठी आवाजें  
झरनों और नदियों में हैं ।  
शाश्वत सत्य की  
प्रक्रिया को पहचान  
अब तक  
भील की आख खुली है,



गंगा की धान बही है  
 और धरती की महक  
 धरती में जड़ी है,  
 इसलिए मानव ।  
 मत भूल  
 मानवता के सपने,  
 अपनत्व की भावना  
 जो अवित है  
 विम्व-विम्वित प्रकाश की भाँति  
 'दीपक' और 'दीपक' में ।

## रगा हुआ मन्त्र

कलम से करके वादे निभाये है मैंने,  
मदारी बनकर जादू जगाये है मैंने ।



## मोर मुकुट

प्रकट हो गया  
मेरा व-हाई  
प्रकृति गाने लगी  
शाश्वत सत्य की प्रश्रिया  
और मोर बनाने लगे  
'मोर मुकुट'  
तो आत्मा व मन की दूरिया  
नजदीकियो मे परिवर्तित हो गई ।

### नींद करेगी स्वागतम्

यूँदावन से चलकर आया  
मेरा 'कान्हा'  
मेरे लिए  
नगे पाँव  
मेरे घर की  
वडी खटखटाने,  
मालूम था  
वो आयेगा  
नींद करेगी  
स्वागतम् ।  
मही हुआ  
मन ही मन  
'कान्हा' हसा  
मोहिनी हसी थी  
मन-मोहन  
बाल-गोपाल  
मुझसे दो लड्डू खाकर

मेरे गत-विगत सपनों मे  
विचरण करते हुए  
लुप्त हो गये  
और मैं कान्हा,  
मेरा सखा  
पुकारने लगा  
तो परहित  
पर-पीडा का दशन वन गया ।  
'ऐसे भी जीवन  
विम्ब-बिम्बित प्रकाश की  
राम माला है व  
भजन माला है' ।

### आसू और आचल

मेरी मा हर राज राधा कृष्ण की पूजा किया करती है  
और चाँदी की प्याली में मिथी का भोग लगाया करती है  
जबकि मैं ठहरा नास्तिक । एक दिन मैं या मेरी आत्मा  
चाँदी की प्याली व राधा कृष्ण की मूर्ति

भोग की प्याली में  
आसू टपके है  
राधा बोली—प्रिय ।  
मेरे आचल में डाला  
नारी कब दु खो से हारी है  
तेरे भक्त की बात—  
कितनी प्यारी है ।

## मन स्थितियाँ

एक रूप का  
रूपान्तर  
एक स्वप्न बुन रहा है  
जिसकी बुनियाद  
'राधा' भी है  
और 'मीरा' भी,  
फिर 'भोले शकर' जैसी  
भोली आत्मा  
कैसे करे  
छल-कपट  
जबकि भ्रान्तिमान अलकार से  
अकित है,  
मन स्थितियाँ ।



### पाचवाँ जन्म

तीन जन्म याद है  
चौथा जन्म साथ है  
उम्र के चालीस साल  
न खीच तू खाल  
अच्छे घुरे हू कम,  
अच्छे घुरे हू घम  
मृत्यु है जीवन का पूणविराम  
करने दे, दो घड़ी विश्राम  
फिर लेने चलूंगा  
पाचवाँ जन्म ।

## लड्डू और प्यार

लेकर चला गया  
उसके लिए लड्डू  
आकाश मंडल में  
वज्रने लगे टकारे  
भीर देवताओं में  
मच गयी हल-चल  
कौन आया !  
देवदूत बोले,  
एक धाप आया है  
अपने इकलौते बेटे को देने लड्डू  
तो देवता खुद बन गये बच्चे  
मुझे दो लड्डू—  
मुझे दो लड्डू ।

## सघर्ष

आसूओं के  
वतासों का  
भोग लगाकर  
हृदय स्पर्शी शब्दों से  
भावा-वेग में  
घुछ कहदू  
तो बुरा न मानना  
मेरे मासी,  
एक दुःख ने सिखाया है  
जीने का अर्थ  
सघर्ष करना है मुझे  
रेत की चादर पर  
तारे टाकने हैं मुझे,  
आग के धुएँ पर  
यादे टागनी हैं मुझे  
वर्षा की बूंदों में  
गग भरने हैं मुझे,  
दिल के तारों से  
रस्सी झूलनी है मुझे  
एक दुःख ने सिखाया है  
जीने का अर्थ  
सघर्ष करना है मुझे ।

## स्वप्न की तीथ-यात्रा

वृन्दावन की कुञ्ज-गलिया  
कभी कान्हा की बातें  
मत्स्य का प्रसाद देकर  
लुक-छिपनी खेलती है  
मुझसे  
'मैं उसके खेल की,  
घोडागाडी हूँ  
और वह कोचवान ।'  
सफर शुरू हुआ  
'राधा'  
फिर एक नयी 'मीरा' के रूप में बोली,  
ओ घोडागाडी वाले  
साथ मुझे भी ले चलो  
तो साथक हुई,  
मेरे स्वप्न की तीथ-यात्रा ।

## बिल की गहराइयों का साँवरा

झूठता गया  
दिल की गहराइयों में  
तो खून और पानी के  
पहरेदारों ने कहा,  
ठहरो—  
मैंने पूछा,  
क्या गुस्ताखी है मेरी ?  
कुछ अधेरो के उर्जियालों से  
दिल रूपी कन्हवाई को  
नापने आया हूँ  
जन्म जात दर्जी हूँ  
मानवता की कमीज बनाने आया हूँ ।  
मुझे न रोको  
कुदरत का चलन भिट जाएगा  
चाँद, तारे व सूर्य की  
योग साधना का सौंदर्य घट जाएगा ।  
मेरा साँवरा—  
बिन-कपड़ों के रह जायेगा ।

## परहित की भावना

स्वप्न मे  
चार महात्मा  
और दो फकीर  
लेकर आये  
पास मेरे  
परहित की भावना  
मैं बोला,  
कामना  
करो स्वागतम्  
जबकि रूप रूपान्तर मे है  
कोई कन्हारी, अल्लाह, ईसा और राम  
जो भारतीय दशन का परिचायक है ।  
इसलिए ओ कवि !  
उन जा चातक  
और बैठ जा कल्पना की डाल पर  
एक सक्ल्प का

विचरण है,  
दशन है ।  
मच पूर्णमासी का चाँद,  
अमावास्या का ग्रहण  
अन्त अनन्त काल का  
काल-चरण ।  
जिमे गाती  
पुरातन सस्मृतिपाँ  
इतिहास  
तू भी गा  
गाता जा,  
धरा पर  
तोपधारी मानव यानर ।

## अलकार

आरती, सकेत और प्रभूलीला  
घन गया दर्शन जीवन का  
नया जन्म हुआ  
नवीनता बन गई  
नव-दृष्टि  
जो खोया था  
वो पा लिया  
'आनन्दित गौतम' बनकर  
घरा की धरोहर को जान लिया ।  
साथ थी गंगा युमना की  
पावन शीतल लहरें,  
कल-कल करते क्षरने  
और महकती माटी का  
महकता आदर्श ।  
सब कुछ अद्भुत था  
शरीर भी आधा नर  
आधी नारी से मुक्त था  
जैसे 'रूप' का 'रूपक'  
'रूप' में ढलकर  
अलवार बन गया हो ।



दु ख रगते हैं मन को

आखों के पानी से धोये  
कोई यशोदा मैया का आंगन  
इस विश्वास के साथ कि—  
'गोपाल खेलेंगे'  
गोपाल आये  
और खेले  
तो मेरा दद,  
धरातल से उठकर  
आकाश की ओर  
सारे ब्रह्माण्ड को  
यह कहने चला गया,  
मेरे आखों के पानी से  
धोये हुए आगन पर  
गोपाल बार-बार आयेंगे  
और खेलेंगे ।







नवल बीकानेरी

जन्म तिथि मिंगसर वदी 8 (अष्टमी) स 2005

जन्म स्थान बीकानेर (राजस्थान)

लेखन शुरू किया 1962 ई मे

नवनीत,

मधुमती,

प्रवर,

उवशी,

युग प्रस्थ भारती,

राजस्थान पत्रिका,

गणराज्य,

पथ-जागरण,

आज का भारत

तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं एवं

समाचार पत्रों में प्रकाशित

व आकाशवाणी

बीकानेर से प्रसारित

साहित्य के क्षेत्र में योगदान

1984/पहली कृति

'बागज का घर'

सम्पक

नवल बीकानेरी

'नवीन कुटीर'

रानी बाजार, बीकानेर।